



# REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

VOLUME - 15 | ISSUE - 7 | APRIL - 2026



## शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों में पारिवारिक जीवन की जटिलताओं, सामाजिक विसंगतियों एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन

अल्का चतुर्वेदी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

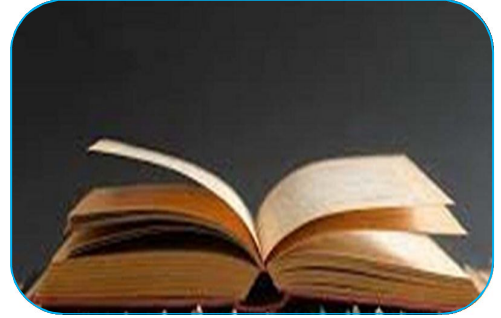
डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

यमुना प्रसाद शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरमौर, जिला रीवा (म.प्र.)

### सारांश –

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियाँ भारतीय समाज, विशेषकर मध्यमवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उनके कथा-साहित्य में पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ दर्शाया गया है, जहाँ संबंधों में तनाव, पीढ़ियों का संघर्ष, संवादहीनता और स्त्री की स्थिति प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती है। वे यह स्पष्ट करती हैं कि आधुनिकता और बदलती जीवनशैली के प्रभाव से पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं, जिससे पारिवारिक संबंध अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण बन गए हैं। इसके साथ ही, उनकी कहानियाँ सामाजिक विसंगतियों और नैतिक मूल्यों के द्वंद्व को भी उजागर करती हैं। वे दहेज प्रथा, स्त्री-पुरुष असमानता, सामाजिक दिखावा और नैतिक पतन जैसी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनके पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि बदलते समय में भी नैतिक मूल्यों का महत्व बना हुआ है। इस प्रकार, शशिप्रभा शास्त्री का कथा-साहित्य समाज के यथार्थ को उजागर करते हुए पाठकों को आत्मचिंतन और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करता है।



**मुख्य शब्द –** पारिवारिक जटिलता, सामाजिक विसंगति, नैतिक मूल्य, मध्यमवर्गीय जीवन, स्त्री-चेतना, हिंदी कथा-साहित्य एवं यथार्थवाद।

### प्रस्तावना –

शशिप्रभा शास्त्री हिंदी कथा-साहित्य की उन महत्वपूर्ण लेखिकाओं में सम्मिलित हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के यथार्थ स्वरूप को अत्यंत संवेदनशीलता एवं गहनता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, अपितु सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों तथा नैतिक मूल्यों का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करने वाली सशक्त रचनाएँ हैं।<sup>1</sup> शास्त्री का कथा-साहित्य विशेष रूप से भारतीय मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं एवं अंतर्विरोधों को उद्घाटित करता है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के मध्य निरंतर द्वंद्व विद्यमान रहता है।<sup>2</sup>

भारतीय समाज में परिवार को एक केंद्रीय संस्था के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास का आधार बनती है। किंतु आधुनिकता, औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के प्रभाव से पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं।<sup>3</sup> संयुक्त परिवारों का विघटन, एकल परिवारों की वृद्धि तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तीव्र आकांक्षा ने पारिवारिक संबंधों को अधिक जटिल एवं तनावपूर्ण बना दिया है। शशिप्रभा शास्त्री ने अपनी कहानियों में इन परिवर्तनों का सूक्ष्म एवं यथार्थपरक चित्रण किया है। उनके पात्र भावनात्मक द्वंद्व, संवादहीनता, संबंधों में दूरी तथा मानसिक तनाव से ग्रस्त दिखाई देते हैं, जो आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।<sup>4</sup>

शास्त्री के कथा-साहित्य में पारिवारिक जीवन केवल पृष्ठभूमि मात्र नहीं, बल्कि एक सक्रिय और गतिशील तत्व के रूप में उपस्थित होता है। पति-पत्नी, माता-पिता एवं संतानों तथा अन्य पारिवारिक संबंधों के माध्यम से वे यह उद्घाटित करती हैं कि किस प्रकार छोटी-छोटी गलतफहमियाँ, अपेक्षाएँ तथा अहंकार संबंधों में दरार उत्पन्न कर देते हैं।<sup>5</sup> विशेषतः स्त्री-दृष्टिकोण को उन्होंने अत्यधिक महत्व प्रदान किया है, जिससे पाठक को पारिवारिक जीवन के उस पक्ष का ज्ञान होता है, जो सामान्यतः उपेक्षित रह जाता है।

सामाजिक विसंगतियाँ भी उनके कथा-साहित्य का एक प्रमुख विषय हैं। भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियाँ-दहेज-प्रथा, लैंगिक असमानता, सामाजिक भेदभाव तथा आडंबरपूर्ण जीवनशैली उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होती हैं।<sup>6</sup> वे उस सामाजिक द्वंद्व को उद्घाटित करती हैं, जहाँ आदर्शों की स्थापना तो की जाती है, किंतु व्यवहार में उनका अनुपालन नहीं होता। इस प्रकार उनकी कहानियाँ समाज के यथार्थ स्वरूप को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत करती हैं।

नैतिक मूल्यों का प्रश्न भी उनके साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वर्तमान समय में भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद के बढ़ते प्रभाव के कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है।<sup>7</sup> शशिप्रभा शास्त्री ने इस परिवर्तन को गहराई से अनुभव करते हुए अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनके पात्र प्रायः नैतिक दुविधाओं से गुजरते हैं, जहाँ उन्हें सही एवं गलत के मध्य चयन करना पड़ता है। यह अंतर्द्वंद्व उनकी कहानियों को अधिक प्रभावशाली एवं यथार्थपरक बनाता है।

विशेषतः उनके साहित्य में स्त्री-जीवन का चित्रण अत्यंत मार्मिक एवं यथार्थपूर्ण है। वे स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसके संघर्षों, समस्याओं एवं आकांक्षाओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं।<sup>8</sup> उनकी कहानियों में स्त्री एक निष्क्रिय पात्र न होकर एक सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरती है, जो अपने अस्तित्व एवं अधिकारों के लिए संघर्षरत है। इस दृष्टि से उनका साहित्य नारीवादी चेतना से भी संबद्ध प्रतीत होता है।

इसके अतिरिक्त, शशिप्रभा शास्त्री की भाषा-शैली सरल, सहज एवं प्रभावपूर्ण है, जो पाठकों को सीधे कथा के भाव-जगत से जोड़ती है। वे प्रतीकों, बिंबों एवं संवादों के माध्यम से अपने विचारों को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करती हैं।<sup>9</sup> उनकी कहानियाँ पाठकों को केवल घटनाओं का विवरण नहीं देती, बल्कि उन्हें चिंतन, मनन एवं आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं।

शशिप्रभा शास्त्री का कथा-साहित्य पारिवारिक जीवन की जटिलताओं, सामाजिक विसंगतियों तथा नैतिक मूल्यों के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाएँ न केवल अपने समय की वास्तविकताओं को उद्घाटित करती हैं, बल्कि समकालीन समाज के लिए भी प्रासंगिक संदेश प्रदान करती हैं।<sup>10</sup> इस प्रकार प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उनके कथा-साहित्य में पारिवारिक जीवन, सामाजिक विसंगतियों तथा नैतिक मूल्यों का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, जिससे उनके साहित्यिक योगदान का यथार्थ मूल्यांकन संभव हो सके।

## विश्लेषण –

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी और संवेदनशील है। भारतीय समाज में परिवार को सामाजिक संरचना की मूल इकाई माना जाता है, परंतु आधुनिकता, औद्योगिकीकरण और बदलती जीवनशैली के कारण इस संस्था में अनेक प्रकार की जटिलताएँ उत्पन्न हो गई हैं। शास्त्री ने इन जटिलताओं को अपने कथा-साहित्य में गहराई से लिखा है। उनकी कहानियों में पति-पत्नी संबंधों में उत्पन्न तनाव, संवादहीनता और भावनात्मक दूरी का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के कारण पारिवारिक संबंधों में आत्मीयता कम होती जा रही

हैं। परिणामस्वरूप, एक ही घर में रहते हुए भी लोग मानसिक रूप से एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, पीढ़ियों के बीच संघर्ष भी उनकी कहानियों का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। नई पीढ़ी आधुनिक विचारों और स्वतंत्रता की ओर अग्रसर है, जबकि पुरानी पीढ़ी परंपराओं और मूल्यों को बनाए रखना चाहती है। यह संघर्ष पारिवारिक संबंधों में तनाव और असंतुलन उत्पन्न करता है।

स्त्री-जीवन की दृष्टि से भी शास्त्री की कहानियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे गृहिणी के रूप में स्त्री की उपेक्षा, उसके त्याग और उसके मानसिक संघर्षों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी नायिकाएँ अक्सर अपने अधिकारों और अस्तित्व के लिए संघर्ष करती दिखाई देती हैं, जो पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को और अधिक गहरा बना देता है।

शशिप्रभा शास्त्री के कथा-साहित्य में सामाजिक विसंगतियों का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली है। वे समाज में व्याप्त उन विरोधाभासों और कुरीतियों को उजागर करती हैं, जो सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। उनकी कहानियों में दहेज प्रथा, स्त्री-पुरुष असमानता, सामाजिक भेदभाव और मध्यवर्गीय जीवन की कृत्रिमता का यथार्थ चित्रण मिलता है। विशेष रूप से दहेज प्रथा जैसी कुरीतियाँ समाज में स्त्री के शोषण का प्रमुख कारण हैं, जिसे शास्त्री ने अपनी कहानियों में तीव्रता से व्यक्त किया है। मध्यवर्गीय समाज की दिखावटी प्रवृत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की होड़ भी उनकी कहानियों में प्रमुख रूप से दिखाई देती है। लोग अपनी वास्तविक स्थिति को छिपाकर एक आदर्श छवि प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, जिससे सामाजिक जीवन में असत्य और कृत्रिमता का प्रसार होता है। इसके अतिरिक्त, शास्त्री यह भी दर्शाती हैं कि समाज में नैतिकता और व्यवहार के बीच गहरा अंतर है। लोग सिद्धांतों की बात तो करते हैं, परंतु व्यवहार में उनका पालन नहीं करते। यह दोहरापन सामाजिक विसंगतियों को और अधिक गहरा करता है।

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों में नैतिक मूल्यों का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक समाज में भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के बढ़ते प्रभाव के कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है। शास्त्री ने इस परिवर्तन को अपने कथा-साहित्य में गहराई से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में पात्र अक्सर नैतिक दुविधाओं से गुजरते हैं, जहाँ उन्हें सही और गलत के बीच चयन करना पड़ता है। यह अंतर्द्वंद्व उनके चरित्रों को अधिक जीवंत और यथार्थपरक बनाता है। शास्त्री के अनुसार, नैतिक मूल्य केवल सामाजिक नियम नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्ति के आंतरिक विकास और सामाजिक संतुलन के लिए आवश्यक हैं। वे यह भी दिखाती हैं कि बदलते समय में नैतिक मूल्यों का स्वरूप परिवर्तित हो सकता है, परंतु उनका महत्व कभी कम नहीं होता।

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों का एक महत्वपूर्ण पक्ष स्त्री-चेतना है। उनकी नायिकाएँ केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे अपने अधिकारों, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करती हैं। वे स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसके संघर्ष, उसकी भावनाओं और उसकी आकांक्षाओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री केवल परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के हर क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित करने में सक्षम है।

शशिप्रभा शास्त्री की भाषा-शैली सरल, सहज और प्रभावशाली है। वे जटिल भावनाओं को भी सरल शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता रखती हैं। उनकी भाषा में कहीं भी कृत्रिमता या आडंबर नहीं मिलता, जिससे पाठक सहज रूप से कथा के साथ जुड़ जाता है। उनकी कहानियों में संवादों का प्रयोग अत्यंत सटीक और प्रभावपूर्ण है, जो पात्रों के मनोभावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। इसके साथ ही, वे प्रतीकों और बिंबों का भी प्रभावी उपयोग करती हैं, जिससे उनकी कहानियाँ अधिक गहन और अर्थपूर्ण बन जाती हैं।

### निष्कर्ष:

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनका कथा-साहित्य भारतीय मध्यमवर्गीय जीवन का सजीव और यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। उन्होंने पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ लिखा है, जहाँ संबंधों में बढ़ती दूरी, संवादहीनता, पीढ़ियों का टकराव तथा आर्थिक और सामाजिक दबाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव से पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन आया है, जिससे पारिवारिक संरचना अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण हो गई है। इसके साथ ही, शास्त्री ने समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों जैसे स्त्री-पुरुष असमानता, दहेज प्रथा, सामाजिक दिखावा और नैतिक दोहरापन को भी गहराई से उजागर किया है। उनकी कहानियाँ समाज के उस यथार्थ को सामने लाती हैं, जहाँ आदर्श और व्यवहार के बीच स्पष्ट अंतर

दिखाई देता है। वे पाठकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि सामाजिक समस्याओं का समाधान केवल बाहरी परिवर्तन से नहीं, बल्कि व्यक्ति के दृष्टिकोण और आचरण में सुधार से संभव है। शशिप्रभा शास्त्री का कथा-साहित्य नैतिक मूल्यों की महत्ता को भी रेखांकित करता है। उनके पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जीवन में सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यबोध और मानवीय संवेदनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी पहले थीं। इस प्रकार उनकी कहानियाँ न केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण करती हैं, बल्कि पाठकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित कर एक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की दिशा भी प्रदान करती हैं।

### संदर्भ –

- <sup>1</sup> शशिप्रभा शास्त्री – कथा-साहित्य संचयन, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2005, पृष्ठ 12
- <sup>2</sup> शशिप्रभा शास्त्री – कथा-साहित्य संचयन, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2005, पृष्ठ 18
- <sup>3</sup> रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास, वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा, 2010, पृष्ठ 245
- <sup>4</sup> शशिप्रभा शास्त्री – चयनित कहानियाँ, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 56
- <sup>5</sup> शशिप्रभा शास्त्री – चयनित कहानियाँ, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 63
- <sup>6</sup> नामवर सिंह – कहानी : नई कहानी, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2001, पृष्ठ 102
- <sup>7</sup> शशिप्रभा शास्त्री – आधुनिक कथा-दृष्टि, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 89
- <sup>8</sup> शशिप्रभा शास्त्री – आधुनिक कथा-दृष्टि, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 94
- <sup>9</sup> गोपाल राय – हिंदी कहानी का इतिहास, पटना : ग्रंथ शिल्पी, 2006, पृष्ठ 211
- <sup>10</sup> शशिप्रभा शास्त्री – कथा-संसार, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2012, पृष्ठ 134